युग द्रष्टा–युग स्रष्टा

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़

पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

युग को देखने वाला युग द्रष्टा कहलाता हैं युग स्रष्टा वह होता है जो युग का निर्माण करता है। भगवान राम, भगवान कृष्ण, भगवान महावीर, भगवान बुद्ध युग द्रष्टा एवं युग स्रष्टा थे। भगवान राम ने मर्यादा की वह रेखा खींची जो आज तक अलंघ्य है। राम राज्य में किसी को दुःख नहीं भोगना पड़ता था। प्रजा त्रितापों से मुक्त थीं। उसी प्रकार भगवान कृष्ण ने महाभारत को टालने के लिए कौरवों और पाण्डवों के मध्य संधि कराने का बहुत ही प्रयास किया किन्तु दुर्योधन के हट के कारण युद्ध अवश्यंभावी हो गया। युद्ध का परिणाम कौरवों के विनाश के रूप में सामने आया। वर्तमान युग में स्वामी विवेकानन्द, राजा राम मोहन रॉय, स्वामी दयानन्द आदि विचारकों ने समाज को एक नई विचारधारा देकर राष्ट्र निर्माण किया। भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास का नारा देकर विकास की एक रूपरेखा तैयार की है। ऐसे महापुरुष ही युग द्रष्टा और युग स्रष्टा होते हैं।

मानव अच्छे समाज राज्य और राष्ट्र का निर्माता होता है। चौरासी लाख जीव योनियों में मानव सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। मानव अपने–अपने कर्मों के अनुसार जन्म लेते हैं और कर्मफल भोग करके चले जाते है। यह संसार एक रंगमंच की तरह है। मानव कठपुतली के तरह अपना कार्य करता है और चला जाता है। अपने क्षमता के अनुसार वह कार्य करता है। कृषक, व्यापारी, अधिकारी, राजनेता, डॉक्टर सभी अपने पुरुषार्थ के अनुसार कार्य कर रहे हैं और कार्य करके संसार से विदा ले लेते हैं।

सृष्टि पंचभूतात्मक है। सम्पूर्ण प्राणी पांच भूतों से निर्मित है। शरीर विनाशशील है और ऊर्जा स्थायी है। केवल द्रव्य और गैस के रूप में इसका परिवर्तन होता रहता है। मूलतत्व एक ही है। मूलतत्व में परिवर्तन नहीं होता। सबका भरण पोषण निर्माण और देखरेख करने वाला एक ही तत्व है वह है ईश्वर रचनात्मक और निषेधात्मक दोनो तत्व यहां हैं। जिस समय जैसी

आवश्यकता होती है उसे वैसी प्राप्ति हो जाती है। युग निर्माता मानव है। युग निर्माता व्यक्ति ही इस संसार में आगे बढ़ता है। एक कहावत है पूत के पांव पालने में ही होते है। उसीसे यह पता चल जाता हैं कि इसका विकास कैसे होगा?

होनहार विरवान के होत चिकने पात अर्थात् जिस पौधे की पत्तियां चिकनी और हरी भरी रहती हैं वह पौधा आगे चलकर के वृक्ष का रूप धारण कर लेता है। इसी प्रकार जो बच्चा जन्म के समय ही स्वस्थ रहता है वह आगे चलकर के भी स्वस्थ बना रहता है। स्वार्थी, लालची व्यक्ति कभी भी युग निर्माण नहीं कर सकता। ऐसा व्यक्ति अपने तक ही सीमित रहता है। युग निर्माता निःस्वार्थी होता है। देश में ऐसे अनेक महापुरुष हुये हैं जिन्होंने नये युग का निर्माण किया है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने देश को अंग्रेजों से मुक्त कराकर एक नये युग का निर्माण किया। महात्मा गांधी ने सत्य, अहिंसा, अस्तेय और विनम्रता के मार्ग को अपनाकर एक ऐसा दृष्टान्त उपस्थित किया जो पूरे विश्व के लिए अनुकरणीय है। मानव एक सामाजिक प्राणी है स्वार्थ, परार्थ और परमार्थ की चेतना उसमें समाहित है अहिंसा की वृत्ति भी उसके अंतर्गत है। इनमें कोई संदेह नहीं कि मानव ने अपने रहन–सहन और व्यवहारों की नग्नता को ओट देने के लिए एक सभ्यता का निर्माण किया है। सभ्यता के लोक व्यापी प्रतिमान होते हैं और उन प्रतिमानों की सुरक्षा करना प्रत्येक सामाजिक व्यक्ति के लिए अनिवार्य हो जाता है।

सभ्यता के प्रतिमानों की सुरक्षा को हम प्रदर्शन नहीं कह सकते। प्रदर्शनरूप प्रतिमान वे होते हैं जिनमें सभ्यता के भाव मुख्य नहीं होकर प्रदर्शन के भाव तीव्र होते हैं। अपने ठाठ–पाट वैभव और देह को अन्य व्यक्तियों के सामने अलंकृत करके प्रस्तुत करना, वह प्रदर्शन है जिसे आम व्यक्ति साश्चर्य देखा करे और उस तरफ आकर्षित हो, किन्तु यथार्थ में वह भव्यता जो दिखाई देती है, होती नहीं है। सभ्यता के प्रतिमान की सुरक्षा में भी कुछ अंशों में तो यह होता है किन्तु वह स्थापित लोक स्वीकृत प्रतिमान होता है। अतः वह हेय नहीं है। जीवन को जिन महापुरुषों ने बहुत गहरे तक समझा है, उन्होंने प्रदर्शन दिखावा और आडम्बर को नितान्त अनावश्यक और हेय घोषित किया है।

शास्त्रों में आडम्बर का स्पष्ट निषेध है। "सव्वे आभरणा भारा" कह कर हमारे युग निर्माताओं ने अलंकार आदि सभी प्रदर्शन प्रदायक वस्तुओं को भार स्वरूप घोषित कर उन्हें त्याग देने का

संदेश दिया है। अत्यंत श्रम और बौद्धिक प्रक्रिया पूर्वक व्यक्ति जो धन कमा रहा है उसे केवल प्रदर्शन और दिखावे में पानी की तरह व्यर्थ बहाए जा रहा है। आर्थिक दृष्टि से संपन्न होकर भी प्रदर्शन के आवेग में फिर विपन्नता की स्थिति में पंहुचा जाता है।

भारत ही नही वरन् वि" व के सभी श्रेश्ठ चिंतकों, दा" िनिकों एवं समाज सुधारकों और युग निर्माताओं ने शांतिपूर्ण सहअस्तित्व को विकास के लिए आवश्यक माना है। इस रूप में संसार के सभी प्रमुख प्राचीन धर्म मानवतावाद की भूमिका पर प्रतिश्ठित हैं। प्रत्येक धर्म प्रवर्तक के मन में वि" व के प्राणियों के प्रति असीम संवेदना और करुणा का भाव रहा है।

युग निर्माता महापुरुषों को सभी श्रद्धा के साथ याद करते हैं।